जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 05
दिनांक 05.01.2023

वृक्षारोपण प्रकृति का सर्वोत्तम सिंगार है–कुलपति डॉ. पीके मिश्रा
जनेकृविवि में वृहद स्तर पर आयोजित हुआ वृक्षारोपण

जबलपुर 05 जनवरी 2023। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की सद्प्रेरणा से कृषि महाविद्यालय की कृषि वानिकी विभाग द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना एग्रोफोरेस्ट्री एवं टीएफआरआई के एआईसीआरपी 28 परियोजना के संयुक्त तत्वाधान में आज फॉरेस्ट्री प्रक्षेत्र में 400 से अधिक शीशम के पौधों का रोपण किया गया। यह पौधे 6 प्रदेशों से (झारखंड, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ) की 32 प्रजाति का संकलन कर रोपण किया गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के मुख्यअतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी. के. मिश्रा द्वारा वृक्षारोपण कर, इस परियोजना के कार्य का शुभारंभ किया गया। इस दौरान कुलपति डॉ. मिश्रा ने कहा कि वृक्षारोपण प्रकृति का सर्वोत्तम सिंगार है। हम सबको समय–समय पर वृक्षारोपण के कार्यों को सतत् जारी रखना चाहिए। ताकि हमारी प्रकृति और सुंदर एवं बेहतर हो सके। वर्तमान में वृक्षों की संख्या में कमी होने से अनेक प्रकार की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। अतः यह एक चिंता का विषय है, इस विषय पर वैज्ञानिकों के साथ–साथ आम जनमानस को भी ध्यान देने की अति आवश्यकता है। कार्यक्रम में संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी.के. कौतू ने कहा कि वानिकी विभाग द्वारा कृषकों के बेहतर लाभ के दृष्टिकोण से एग्रोफोरेस्ट्री आधार पर शोध का कार्य अति उपयोगी साबित होगा। फॉरेस्ट्री विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश बाजपेई ने प्रक्षेत्र पर कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा का स्वागत पुष्पगुच्छ से किया एवं परियोजना के लिये किए जा रहे कार्यों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। परियोजना प्रभारी डॉ. एस.बी. अग्रवाल ने बताया कि एग्रो बेस्ड कृषि हेतु शीशम का 400 से अधिक पौधों का रोपण लगभग 32 किस्मों का उपयोग कर किया जा रहा है। परियोजना के अंतर्गत पौधों की रोपण में पौधे से पौधे की एवं लाइन से लाइन की दूरी 3 मीटर रखी गई है। इस प्रकार शीशम के पौधों के बीच में अन्य फसलें जैसे गेहूं सरसों धान की खेती कर किसान भाई अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को वानिकी विभाग के साथ टीएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. फातिमा सरीन, डॉ. कौशल त्रिपाठी एवं श्री रवि हरगणे का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। शीशम जिसका वानस्पतिक नाम डलबर्जिया सिस्सु के नाम से जाना जाता है शीशम की लकड़ी फर्नीचर एवं इमारती लकड़ी के लिए बहुत उपयुक्त होती है शीशम का औषधि रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इनका पौधा मध्यम ऊंचाई का होता है कीड़े एवं रोग की समस्या कम होती है इनकी पत्तियों एवं मुलायम शाखाओं की कटाई छटाई कर पशुओं के चारे के रूप में उपयोग कर सकते हैं किसान भाई शीशम के वृक्षारोपण कर बीच की बची हुई जगह पर अन्य फसलों की खेती कर अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी.के. कौतू, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. दीप पहलवान, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय जबलपुर डॉ. पी.बी. शर्मा कृषि वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश बाजपेई, परियोजना प्रभारी डॉ. एस. बी. अग्रवाल, सुरक्षा अधिकारी डॉ. वाय.एम. शर्मा, तकनीकी अधिकारी डॉ. अनय रावत, आईसीआर नोडल ऑफिसर डॉ. संजीव कुमार, इंजीनियर शरद जैन डॉ. संजय सिंह, श्री मनोज पाठक, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. शेखर सिंह बघेल, डॉ. यतिराज खरे, वानिकी विभाग के वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों की उपस्थिति रही।